>

Title: Need to impose restriction on mining of sand from river beds in the country particularly in Bihar to prevent environmental degradation.

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): नदियां, प्रकृति का मानव के लिए वरदान है । देश की सभ्यता एवं संस्कृति इन्हीं नदियों के किनारे विकसित हुई है । स्वच्छ एवं अविरल धारा नदी का जीवंत स्वरूप है । नदी में पानी, दोनों किनारे तथा नदी के पेट में भरा-पड़ा बालू, कंकड़, पत्थर सभी मिलकर नदी का स्वरूप बनाते हैं। इसमें किसी तरह की कमी नदी के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है । नदी के किनारे नदी को संयमित करते हैं तथा पेट में भरा बालू-रेत नदी के गंदे जल की सफाई ही नहीं करता है बल्कि भू-गर्भीय स्वच्छ जल की उपलब्धता को भी सुनिश्चित करता है ।

नदी का बालू, रेल, कंकड़, पत्थर निर्माण उद्योग की प्रमुख सामग्री बन गई है । नदी से इन सामग्रियों का अंधा-धुंध दोहन विशेषकर बिहार में नदियों के अस्तित्व पर ही खतरा पैदा कर रहा है । अभी तक नदियों के पेट की सतह से तथा किनारों से ही इन सामग्रियों का मशीन से खुदाई कर निष्कासन होता था अब तो बोरिंग कर सतह से 30-35 फीट नीचे से भी बालू का निष्कासन हो रहा है अर्थात् सतह एवं किनारे का सत्यानाश के बाद अब सतह के अंदर ही सामग्री का निष्कासन भयानक त्रासदी का कारण बनेगा ।

पर्यावरण को संतुलित करने तथा स्वच्छ भू-गर्भीय जल की उपलब्धता का आधार है नदियां । नदियों का किनारा तथा उसमें मौजूद प्राकृतिक सामग्री (बालू इत्यादि) का एक सीमा से अधिक निष्कासन तथा सतह के अंदर की सामग्री जो स्वच्छ जल उपलब्धता को सुनिश्चित करती है, को हटा लेना अवैज्ञानिक सोच का परिणाम है । सतह का तथा सतह के नीचे का बालू फील्टर का कार्य करता है । नदी में सतह पर बालू नहीं होगा तथा सतह के नीचे का भी बालू निकाल लिया जाएगा तो फील्ट्रेशन की प्रक्रिया ही समाप्त हो जाएगी तथा बचा गंदा पानी मानव जीवन के अस्तित्व पर खतरा पैदा कर रहा है । पृथ्वी पर मौजूद नदियों में यह सामग्री जिसका आदिकाल से संरक्षण ही नहीं किया जाता था बल्कि नदियों को पूजनीय माना जाता था क्योंकि इन्हें मानव सभ्यता का आवश्यक अंग स्वीकार किया जाता रहा है ।

मैं सरकार से मांग करता हूं कि बिहार राज्य के साथ अन्य प्रदेशों में भी नदियों से बालू तथा रेत को एक सीमा से अधिक नहीं निकाला जाए तथा आवश्यकतानुसार बनाए रखने के लिए विशेषज्ञों की समिति का गठन किया जाए तो तय करे कि सतह पर स्वच्छ जल उपलब्ध करने हेतु इनकी आवश्यक मात्रा क्या हो ।